आई.एस.एस.एन. 0975-4083

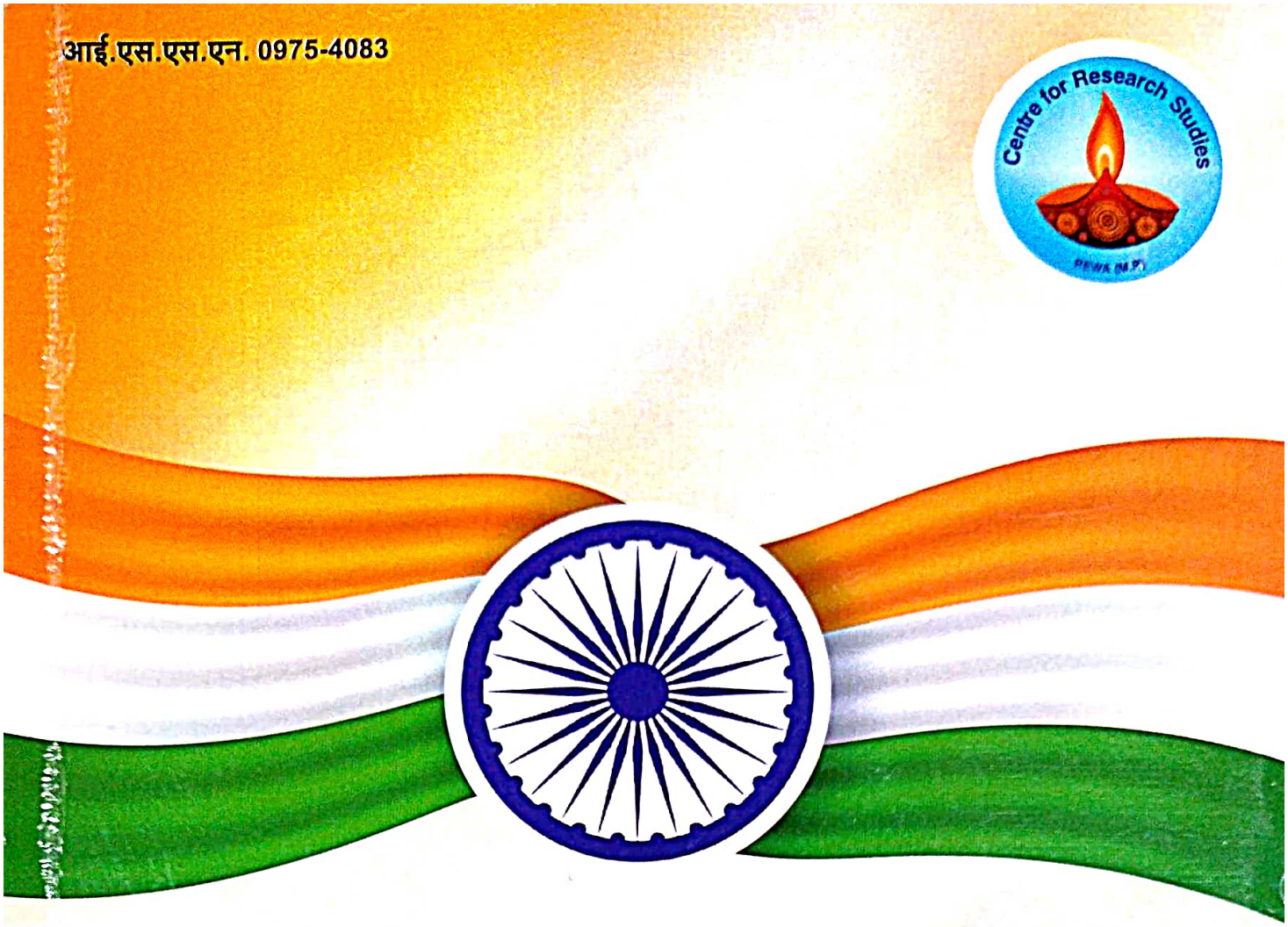

रिसर्च जरनल ऑफ आर्ट्स, मैनेजमेन्ट एण्ड सोशल साइन्सेस

PEER-REVIEWED RESEARCH JOURNAL
UGC JOURNAL NO. (OLD) 2138, IMPACT FACTOR 4.875
Indexed & Listed at: Ulrich's International Periodicals Directory ProQuest, U.S.A. Title Id: 715205

अंक-20, हिन्दी संस्करण, वर्ष-10, मार्च 2021

2021

www.researchjournal.in

आई. एस. एस. एन. 0975-4083

रिसर्च जरनल ऑफ आर्ट्स, मैनेजमेन्ट एण्ड सोशल साइन्सेस

Peer-Reviewed Research Journal
UGC Journal No. (Old) 2138
Impact Factor 4.875
Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, ProQuest, U.S.A. Title Id : 715204

अंक-20 | हिन्दी संस्करण | वर्ष-10 | मार्च 2021

प्रोफेसर ब्रजगोपाल
प्रधान सम्पादक
सेवानिवृत्त आचार्य, उच्च शिक्षा
प्रतिष्ठित भारतेन्दु हरिश्चन्द्र एवार्ड से सम्मानित
profbrajgopal@gmail.com

डॉ. अखिलेश शुक्ल
ऑनरेरी सम्पादक
प्राध्यापक, समाजशास्त्र एवं समाजकार्य विभाग
उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, नैक 'ए' ग्रेड
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)
प्रतिष्ठित भारतेन्दु हरिश्चन्द्र एवार्ड तथा पं. गोविन्द वल्लभ पंत एवार्ड से सम्मानित
akhileshtrscollege@gmail.com

डॉ. संध्या शुक्ल
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग
उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, नैक 'ए' ग्रेड
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)
drsandhyatrs@gmail.com

डॉ. गायत्री शुक्ल
अतिरिक्त निदेशक, सेन्टर फॉर रिसर्च स्टडीज, रीवा
shuklagayatri@gmail.com

डॉ. आर. एन. शर्मा
सेवानिवृत्त आचार्य, उच्च शिक्षा, रीवा
rnsharmanehru@gmail.com

सेन्टर फॉर रिसर्च स्टडीज, रीवा
की मुख्य शोध पत्रिका

- शोध पत्र में शोध पद्धति तथा शोध में प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण किया जाना चाहिए।
- शोध पत्र में निष्कर्ष और अंत में संदर्भ ग्रंथ सूची दी जाये। संदर्भ ग्रंथों का विवरण पूरा दिया जाये। लेखक का नाम, वर्ष, पुस्तक का नाम, प्रकाशक का विवरण, प्रकाशक का स्थान और पृष्ठ संख्या आदि का विवरण दिया जाना चाहिए।
- शोध पत्र माईक्रोसॉफ्ट वर्ड की फाइल में टाइप किया हुआ होना चाहिए। (नोट- पेज मेकर की फाइल, पी.डी.एफ. फाइल, स्कैन मैटर आदि में कदापि शोध पत्र न भेजें) शोध पत्र हिन्दी लिपि में कृतिदेव या देवलिस फांट 010(फॉन्ट साइज 14, स्पेस डबल, मार्जिन ए-4 साईज के कागज में चारो तरफ 1 इंच) में भेजा जाना चाहिए।
- शोध पत्र के साथ यह घोषणा अवश्य संलग्न करें कि शोध पत्र मौलिक है तथा इसे कहीं अन्यत्र प्रकाशनार्थ प्रेषित नहीं किया गया है।

सर्वप्रथम शोध पत्र ई-मेल द्वारा भेजें-

- **researchjournal97@gmail.com,**
- **researchjournal.journal@gmail.com**
- शोध पत्र की स्वीकृति की सूचना सम्पादकीय कार्यालय द्वारा लेखक को ई-मेल एवं दूरभाष द्वारा प्रदान की जाती है।

© सेन्टर फॉर रिसर्च स्टडीज

एक अंक रुपये 500.00	-सदस्यता शुल्क -	
अवधि	व्यक्तिगत सदस्यता	संस्थागत सदस्यता
वर्ष एक	2000-00	2500-00
वर्ष दो	2500-00	4000-00

सदस्यता शुल्क की राशि गायत्री पब्लिकेशन्स के स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, ब्रांच-रीवा सिटी (आईएफएस कोड 0004667 MICR Code 486002003) के खाता क्रमांक 30016445112 में जमा की जाय, नगद जमा की स्थिति में 75 रु. अतिरिक्त बैंक चार्ज जोड़ा जाय।

प्रकाशकः गायत्री पब्लिकेशन्स
रीवा- 486001 (म.प्र.)

मुद्रकः लीनेज ऑफसेट
रीवा (म.प्र.)

संपादकीय कार्यालय

186/1, विन्ध्य विहार कालोनी
रीवा- 486001 (म.प्र.)
E-mail- researchjournal97@gmail.com, researchjournal.journal@gmail.com
www.researchjournal.in
दूरभाष - 7974781746

रिसर्च जरनल में प्रस्तुत किये गये विचार और तथ्य लेखकों के है, जिनके विषय में सेन्टर फॉर रिसर्च स्टडीज, सम्पादक मण्डल, प्रकाशक तथा मुद्रक उत्तरदायी नहीं है। रिसर्च जरनल के सम्पादन एवं प्रकाशन में पूर्ण सावधानी रखी गई है, किन्तु किसी त्रुटि के लिए सेन्टर फॉर रिसर्च स्टडीज, सम्पादक मण्डल, प्रकाशक तथा मुद्रक उत्तरदायी नहीं है। सम्पादन का कार्य अव्यावसायिक और ऑनरेरी है। सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र, रीवा जिला रीवा (म.प्र.) रहेगा।

अनुक्रमणिका

01.	महिला पुलिसकर्मियों की समस्याओं का विश्लेषण (रीवा संभाग के विशेष संदर्भ में समाजशास्त्रीय अध्ययन) **प्रियंका तिवारी** **अखिलेश शुक्ल**	09
02	छात्र - छात्राओं में मादक पदार्थों का सेवन, प्रभाव एवं समस्यायें (सागर नगर के महाविद्यालयों के विशेष संदर्भ में) **रश्मि दुबे**	15
03.	महिला सशक्तिकरण : चुनौतियाँ एवं अवसर **नीलम शर्मा** **बिन्नी खेड़ा**	20
04.	राजस्थान के जनजातीय समुदाय का सामाजिक-आर्थिक स्वरूप में परिवर्तन का अध्ययन **विक्रम सिंह**	24
05.	महिला स्व सहायता समूह की कार्यप्रणाली का अध्ययन **चांदनी जायसवाल**	27
06.	सेलफोन का सामाजिक जीवन पर प्रभाव (रीवा नगर के विशेष संदर्भ में) **मधुलिका श्रीवास्तव** **राकेश तिवारी**	30
07.	वैदिक कालीन समाज में महिलाओं के अधिकार **नीरज गंगवार**	36
08.	लैंगिक असमानता **कैलाश सोलंकी**	45
9.	इमेनुअल कांट के राजनीतिक दर्शन की समकालीन प्रासंगिकता **सुधा गुप्ता**	48
10.	छतरपुर जिले में पान कृषि की उत्पत्ति एवं विकास **नीना चौरसिया**	54
11.	बौद्ध साहित्य में वर्णित सामाजिक जन-जीवन में पर्यावरण **अनित्य गौरव** **अजय कुमार यादव**	58
12.	भारतीय सभ्यता के उत्थान में राजस्थान का योगदान **अविनाश कुमार**	64
13.	मराठों में 'कम्पू' व्यवस्था का आगमन **अंतिमा कनेरिया**	70
14.	गुप्तकालीन भारत में ताम्र निर्मित बुद्ध की महाप्रतिमा : एक ऐतिहासिक विमर्श **अमोल कुमार**	73
15.	गढ़वाल चित्रशैली का अद्‌भुत सौन्दर्य **निशा गुप्ता**	78
16	समाचार पत्र में विज्ञापन की भूमिका **अमित शुक्ल**	81

UGC Journal No. (Old) 2138, Impact Factor 4.875, ISSN 0975-4083

17. छत्तीसगढ़ के युवा कवियों के समकालीन काव्य का स्वरूप 85
शैलेन्द्र कुमार ठाकुर
कृष्णा चटर्जी
गिरिजा साह

18. शुभदा मिश्रा की कहानियों में नारी चेतना के आयाम 93
उर्मिला शुक्ला
मधुलता बारा
अपर्णा सिंह

19. ध्वनि की अवधारणा: एक अध्ययन 97
रामेश्वर पाण्डेय
प्रज्ञा ओझा

20. छात्तीसगढ़ी लोकगीतों में अभिव्यक्त 'राम' का स्वरूप 100
श्रीदेवी चौबे
ऋचा शुक्ला

21. उपभोक्तावादी संस्कृति के प्रतिरोध में हिंदी उपन्यास 109
अनिता प्रजापत

22. महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ का शताब्दी वर्ष और प्रेमचन्द 115
निशा राठौर
अभिषेक कुमार गुप्ता

23. दुष्चिंता, तनाव व विषाद को दूर करने में 118
श्रीमद्भागवद्गीता की भूमिका
सुरभि मिश्रा

24. हिन्दी के प्रमुख ऐतिहासिक उपन्यासों में चित्रित नारी-पात्रों की राजनीति में भूमिका 121
उर्मिला शुक्ल
मधुलता बारा
मल्लिका मिश्रा

25. छत्तीसगढ़ के समकालीन युवा कवि 127
शैलेन्द्र कुमार ठाकुर
कृष्णा चटर्जी
गिरिजा साह

26. साहित्य के उपकरण 132
मधुकर राठोड

27. "शिक्षा के अधिकार का मध्यप्रदेश के अनुसूचित जनजातीय क्षेत्रों में क्रियान्वयन 138
:झाबुआ एवं अलीराजपुर जिले के विशेष संदर्भ में"
माया रावत

28. उच्च शिक्षा की चुनौतियॉं,समस्याएँ एवं निदान 149
सुशील कुमार मिश्रा

29. शिक्षा का निजीकरण-समाधान या समस्या 153
सिद्धार्थ मिश्रा

30. चयनात्मक प्राणायाम से छात्राओं के हीमोग्लोबीन के स्तर के 157
प्रभाव का अध्ययन
वनिता चंद्रात्रे

UGC Journal No. (Old) 2138,
Peer-Reviewed Research Journal
Impact Factor 4.875, ISSN 0975-4083
Vol.- 20, Hindi Edition, Year-10, March 2021

छात्र - छात्राओं में मादक पदार्थों का सेवन, प्रभाव एवं समस्यायें (सागर नगर के महाविद्यालयों के विशेष संदर्भ में)

• दीपक दुबे

सारांश- वर्तमान समय में कालेज और विश्वविद्यालय स्तर के छात्र - छात्राओं में नशे की प्रवृति अधिकतर पायी जाती है। इसका प्रतिशत कम या अधिक कुछ भी हो सकता है। नगरीय शिक्षण संस्थाओं के छात्रों में नशे की प्रवृत्ति का प्रतिशत तुलनात्मक रूप से अधिक है। वर्तमान में विद्यार्थियों द्वारा नशा एक फैशन सनक या आधुनिकता के रूप में लिया जाता है। नशा करना कोई नई समस्या नहीं है वरन इसके मूल में भारतीय सामाजिक ढांचे में होने वाला परिवर्तन छिपा हुआ है। पूर्व में हमारा समाज बहुत संगठित था व्यक्तित्व के विकास में परिवार की अहम भूमिका थी पर सूचना प्रोद्योगिकी के विकास के कारण व्यक्ति-व्यक्ति के बजाय गैजेट्स से अपनी समस्या का समाधान ढूंढ्ता है जहां भावनाओं का कोई स्थान नहीं होता। वर्तमान में शिक्षण संस्थाएं कमजोर नियमों के कारण नशाखोरी एवं असामाजिक कृत्य के अड्डे बनते जा रहे हैं। जहां विद्या अध्ययन की कामना रखने वाले विद्यार्थी बुरी संगत एवं दिखावे के साथ - साथ सामाजिक दबाव का शिकार बनकर नशा संस्कृति से जुड़ जाते हैं। वर्तमान में छात्र-छात्राओं में नशा एक गंभीर सामाजिक समस्या है तथा देश,समाज व परिवार के लिए नशा एक अभिशाप है। यह एक ऐसी बुराई है जिससे इंसान का अनमोल जीवन समय से पहले ही मौत का शिकार हो जाता है। नशे के लिए समाज में शराब,गांजा,अफीम,स्मैक जैसे घातक मादक दवाओं और पदार्थों का उपयोग किया जा रहा है। इसमें व्यक्ति को शारीरिक तथा मानसिक तथा आर्थिक हानि के साथ-साथ वह अपने वातावरण को भी दूषित करता है। साथ में परिवार वालों को भी इसका खामियाजा भुगतना पड़ता है और ऐसे व्यक्ति समाज में अपनी प्रतिष्ठा भी खो देते हैं। नशा करने वाले व्यक्ति समाज के लिए अभिशाप बन जाता है।

मुख्य शब्द- मादक पदार्थ, स्वास्थ्य, युवा, व्यसन, मद्यपान

किसी भी समाज के लिए मद्यपान या नशा एक अभिशाप है। यह एक ऐसी बुराई है, जिससे इंसान का अनमोल जीवन समय से पहले ही मौत का शिकार हो जाता है। नशे के लिए समाज में शराब, गांजा, भांग, अफीम, जर्दा, गुटखा, तम्बाकू और धूम्रपान सहित चरस, स्मैक, कोकीन, ब्राउन शुगर जैसे घातक मादक दवाओं और पदार्थों का उपयोग किया जा रहा है। इन जहरीले और नशीले पदार्थों के सेवन से व्यक्ति को शारीरिक, मानसिक और आर्थिक हानि पहुंचने के साथ ही साथ इससे सामाजिक वातावरण भी प्रदूषित होता ही है साथ ही स्वयं और परिवार की सामाजिक स्थिति को भी बहुत नुकसान पहुंचता है। नशे के आदी व्यक्ति को समाज में हेय दृष्टि से देखा जाता है। नशा या मद्यपान करने वाला व्यक्ति परिवार के लिए बोझ स्वरूप हो जाता है उसकी समाज एवं राष्ट्र के लिये उपादेयता शून्य हो जाती है। वह नशे से अपराध की ओर अग्रसर हो जाता है तथा शांतिपूर्ण समाज के लिए अभिशाप बन जाता है। नशा अब एक अन्तर्राष्ट्रीय विकराल समस्या बन गई है। मद्यपान से आज स्कूल जाने वाले छोटे-छोटे बच्चों से लेकर बड़े-बुजुर्ग विशेषकर युवा वर्ग बुरी तरह प्रभावित हो रहे हैं। इस अभिशाप से समय रहते मुक्ति पा लेने में ही मानव

• प्राध्यापक, समाजशास्त्र शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय सागर (म.प्र.)

समाज की भलाई है। जो इसके चंगुल में फंस गया वह स्वयं तो बर्बाद होता ही है साथ ही साथ उसका परिवार भी बर्बाद हो जाता है। आज कल अक्सर यह देखा जा रहा हैकि युवा वर्ग इसकी चपेट में दिनों - दिन आ रहा है, वह तरह-तरह के नशे जैसे- तम्बाकू, गुटखा, बीड़ी, सिगरेट ओर शराब के चंगुल में फंसता जा रहा है। जिसके कारण उनका कैरियर चौपट हो रहा है। दुर्भाग्य है कि आजकल नौजवान शराब और धूम्रपान को फैशन और शौक के चक्कर में अपना रहे है। इन सभी मादक पदार्थो के सेवन का प्रचलन किसी भी स्थिति में किसी भी सभ्य समाज के लिए वर्जनीय होना चाहिए।

नशीले पदार्थों का अनावश्यक उपयोग लगातार बढ़ रहा है। वर्तमान में युवकों में मादक- द्रव्यों का उपयोग एक फैशन बन गया है। परिणामत: उत्तेजना अनुभव के लिए नवयुवक धीरे-धीरे इन नशीले पदार्थों के आदी हो जाते है। विश्वविद्यालयों के छात्रावासों के छात्रों में नशीली दवाईयों पर निर्भरता बढ़ रही है। इन मादक द्रव्यों में अफीम, हीरोइन,मरिजुआना, हशीश, प्रमुख है। अपराधशास्त्रियों ने आँकड़ों के आधार पर वह निष्कर्ष निकाला है कि इन नशीली दवाईयों के सेवन का अपराध से घनिष्ट सम्बन्ध है। न्यूयार्क में किये गये एक सर्वेक्षण से पता चला कि मादक-द्रव्यों की बिक्री बढ़ने के साथ-साथ अपराधों की संख्या में भी वृद्धि हो जाती है। वर्तमान दौर में बढ़ते हुए मादक द्रव्य व्यसन के साथ-साथ समाज में बाल अपचारी भी बढ़ रहे हैं। अगर युवाओं की नशीले पदार्थ के सेवन की प्रवृति पर प्रतिबंध नहीं लगाया जाता है तो यह प्रवृति हमें एक दिन उस विश्व में लाकर खड़ा करेगी जहां चारों ओर अपराधी ही अपराधी नजर आयेंगे। मादक द्रव्य व्यसन की भयंकरता को दृष्टिगत रखते हुएडॉ. परिपूर्णानन्द वर्मा ने मदिरा और अपराध तथा ड्रग्स और अपराध को जुड़वां बहनें कहा है। मदिरा अर्थात शराब तथा ड्रग्स एक प्रकार के उतक-जहर हैं, जो एक बार के सेवन से भी हृदय की धड़कन को बुरी तरह प्रभावित करते हैं। निरन्तर मद्यपान एवं मादक - द्रव्यों के सेवन को आंशिक आत्महत्या माना जा सकता है। मद्यपान से व्यक्ति का शारीरिक और मानसिक पतन हो जाता है व उसका सम्पूर्ण जीवन बिखर जाता है। अमेरिका की विधि संविदा के अनुसार वह व्यक्ति जो किसी नशीले पदार्थों का उपयोग करता है, परिणाम स्वरूप नैतिकता स्वास्थ्य सुरक्षा एवं जनकल्याण को क्षति पंहुचाता है। मादक पदार्थों का सेवन युवा वर्ग को शनैः शनैः समाप्त कर रहा है। व्यक्ति परिवार और सामाजिक विघटन के लिये उत्तरदायी विघटनकारी शक्तियों में नशा सर्वाधिक विस्फोटक है नशा कोई भी हो वह जीवन की गतिशीलता को कम करता है, मनुष्य को असामाजिकता की और उन्मुख करता है भारतीय गुरूकुल पद्धति जो कल तक स्वर्णिम पद्धति के रूप में विख्यात थी, उसे आज युवाओं ने ड्रग्स के नशे में विस्तृत कर दिया है। भारतीय मानक शोध संस्थान के सर्वे के अनुसार सर्वाधिक नशा हमारे विश्वविद्यालय परिसर में पाया जाता है।

गुरूदेव रवीन्द्र नाथ टैगोर ने जिन शिक्षण संस्थाओं को विद्या अध्ययन की छावनी की उपमा दी थी, वहां आज सिगरेट और शराब का प्रचलन सामान्य बात है। मादक पदार्थों के सेवन से परिवार, समाज तथा मित्र सब प्रभावित हो रहे है। इस संबंध में है सागर नगर में उच्च शिक्षा अध्ययनरत छात्र-छात्राओं का चयन किया गया जिसमें 2500 विद्यार्थियों को निदर्श के रूप में चुना गया और ऑन लाइन / ऑफ लाइन उनसे आंकड़े एकत्रित करने

का प्रयास किया गया। देश, समाज, स्वास्थ आदि पर मादक पदार्थों के सेवन का क्या बुरा प्रभाव पड़ता है यह जानकारी निदर्शित विद्यार्थियों से प्राप्त की तो निम्न आंकड़े प्राप्त हुये।

मादक पदार्थों का बुरा प्रभाव

क्र.	निम्न पर बुरा प्रभाव पड़ता है	आवृत्ति		प्रतिशत		कुलयोग (प्रतिशत)
		छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा	
1	परिवार पर	200	400	8.00	16.00	24.00
2	स्वास्थ्य पर	350	300	14.00	12.00	26.00
3	मित्रों पर	200	150	8.00	6.00	14.00
4	समाज पर	100	200	4.00	8.00	12.00
5	शैक्षणिक परिसर	150	200	6.00	8.00	14.00
6	कोई उत्तर नहीं	00-	250	00.00	10.00	10.00
	कुलयोग	**1000**	**1500**	**40.00**	**60.00**	**100.00**

उक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि 26.00 प्रतिशत विद्यार्थियों ने यह स्वीकार किया है कि मादक द्रव्य व्यसन से स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। 24.00 प्रतिशत छात्र छात्राओं ने परिवार पर बुरे प्रभाव की बात को स्वीकारा जबकि 14.00 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बताया कि मादक पदार्थों का बुरा प्रभाव शैक्षणिक परिसर व मित्रों पर पड़ता है। संपूर्ण समाज की बात पूछने पर सिर्फ 12.00 प्रतिशत विद्यार्थियों ने हां में उत्तर दिया शायद वे समाज को परिवार शैक्षणिक परिसर से अलग समझ रहे होंगे। 10.00 विद्यार्थियों से यह पूछने पर कि मादक पदार्थों के सेवन से क्या क्या बुरे प्रभाव होते है, कोई भी उत्तर नहीं दिया। इससे स्पष्ट है कि भले ही विद्यार्थी नशा कर रहे हों पर इसके बुरे प्रभाव से भी परिचित है।

आज नशे के गिरफ्त में हर वर्ग का व्यक्ति है और वह कब कैसे किस उम्र में इसकी चपेट में आ गया स्वंय समझ ही नहीं पाया निदर्शित छात्र - छात्राओं से जब यह पूछा गया कि वे किस उम्र में नशे की गिरफ्त में आये तो इसका उनके पास कोई जवाब नहीं था, पर उनके स्कूल कॉलेज को जब माध्यम बनाकर आंकड़े एकत्र किये तो निम्न जानकारी प्राप्त हुई -

मादक पदार्थों के सेवन का विवरण

क्र.	स्वरूप	आवृत्ति		प्रतिशत		कुलयोग (प्रतिशत)
		छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा	
1	प्राथमिक स्कूल	40	00	1-60	0-00	1-60
2	माध्यमिक स्कूल	55	20	2-20	0-80	3-00
3	हाई स्कूल	235	280	9-40	11-20	20-60
4	महाविद्यालयीन स्तर	670	1200	26.80	48.00	74.80
	कुलयोग	1000	1500	40.00	60.00	100.00

उपरोक्त तालिका से यह विदित होता है कि प्राथमिक स्कूल से मादक पदार्थों के सेवन करने वाले विद्यार्थियों का प्रतिशत 1.60 है, 3.00 प्रतिशत विद्यार्थी ने बताया कि उन्होंने माध्यमिक स्तर पर मादक पदार्थों का सेवन प्रारंभ कर दिया था, 20.60 प्रतिशत विद्यार्थियों ने हाई स्कूल से मादक पदार्थ के सेवन की बात स्वीकार की जबकि 74.80

प्रतिशत विद्यार्थियों ने महाविद्यालय स्तर पर मादक पदार्थों का सेवन प्रारंभ कर दिया जो निदर्श का सर्वाधिक प्रतिशत है अर्थात महाविद्यालयों में मादक पदार्थों का सेवन करने वाले अधिकाधिक छात्र-छात्रायें किसी न किसी प्रकार के नशे में गिरफ्त है।

नशा एक ऐसी बुराई है जिससे इंसान का अनमोल जीवन समय से पहले ही मौत का शिकार हो जाता है। नशे के लिये समाज में शराब, गांजा, भांग, अफीम, जर्दा, गुटखा, तम्बाकू और धूम्रपान बीड़ी, सिगरेट, हुक्का चिलम सहित स्मैक, कोकीन, ब्राउन शुगर जैसे घातक मादक दवाओं और पदार्थों को उपयोग किया जा रहा है। इस जहरीले और नशीले पदार्थों के सेवन से व्यक्तियों को शारीरिक, मानसिक और आर्थिक हानि पंहुचने के साथ ही परिवार की सामाजिक व आर्थिक स्थिति को भी बहुत नुकसान पंहुचता है। नशा के आदी व्यक्ति परिवार के लिए बोझ स्वरूप हो जाता है। उसकी समाज के लिए उपयोगिता शून्य हो जाती है। निदर्शित विद्यार्थियों ने जब नशे की बात को स्वीकारा तो उनसे यह पूछने का प्रयास किया गया कि वे किस रूप में नशे का सेवन करते है।

मादक पदार्थों के सेवन का स्वरूप

क्र.	स्वरूप	आवृत्ति		प्रतिशत		कुलयोग (प्रतिशत)
		छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा	
1	गोली के रूप में	70	45	2.80	1.80	4.60
2	धूम्रपान	400	330	16.00	13.20	29.20
3	पान के साथ	50	05	2.00	0.20	03.53
4	पेय के रूप में	355	220	13.00	8.80	21.80
5	उत्तर नहीं	155	900	6.20	36.00	42.20
	कुलयोग	**1000**	**1500**	**40.00**	**60.00**	**100.00**

आज मादक पदार्थों के सेवन करने के अनेक उपाय अपनाये जाने लगें है। इसी को ध्यान में रखकर जब निदर्शित विद्यार्थियों से जानकारी प्राप्त की तो सर्वाधिक 42.20 प्रतिशत छात्र- छात्राओं ने नशा करने की बात तो मानी पर वो उसका उपयोग किस रूप में करते है इसका उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया 29.20 प्रतिशत छात्र-छात्राओं ने धूम्रपान के माध्यम से नशे की बात बतायी। 21.80 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बताया कि वे पेय के रूप में नशे का सेवन करते है। 4.60 प्रतिशत विद्यार्थियों ने गोली के रूप में नशे की बात बतायी तथा 3.53 प्रतिशत विद्यार्थियों ने बतया कि वे पान के साथ नशीली वस्तुओं का सेवन करते है।

युवा वर्ग पढ़ा लिखा और शिक्षित है। नशे की गिरफ्त में है, पर वह मानता है कि नशा एक बहुत बड़ी राष्ट्रीय समस्या है तथा उच्च शिक्षा से संबंधित होने के कारण समाज व राष्ट्र की समस्या से परिचित है। निदर्शित विद्यार्थियों से जब यह जानने का प्रयास किया गया कि क्या नशा को आप एक राष्ट्रीय समस्या मानते है, तो निम्न आंकड़े प्राप्त हुये।

नशा एक राष्ट्रीय समस्या है

क्र	स्वरूप	आवृत्ति		प्रतिशत		कुलयोग (प्रतिशत)
		छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा	
1	हां	900	1300	36.00	52.00	88.00
2	नहीं	100	200	04.00	08.00	12.00
	कुलयोग	**1000**	**1500**	**40.00**	**60.00**	**100.00**

अध्ययन के दौरान जब निदर्शित विद्यार्थियों से यह पूछा गया कि क्या नशा एक राष्ट्रीय समस्या है तो 88.00 प्रतिशत विद्यार्थियों ने इस बात को स्वीकारा पर 12.00 प्रतिशत विद्यार्थी नशे को राष्ट्रीय समस्या नहीं मानतें वे इसे व्यक्तिगत समस्या मानते है।

अध्ययन के दौरान प्राप्त आंकड़ों से एक बात तो स्पष्ट है कि 88.00 प्रतिशत विद्यार्थी नशे को एक राष्ट्रीय समस्या मानते है, इसके बाद भी वो नशा करते है। आज का युवा वर्ग किसी भी परिस्थिति के साथ समझौता नहीं करना चाहता तथा आसानी से उसका हल ढूंढने का प्रयास करता है और सारी समस्यायों का निदान वह नशे के रूप में करना चाहता है। नशा उतरने के बाद वह जरूर स्वास्थ्य, परिवार व समाज के बारे में सोचता है, पर जब उसे तनाव घेरने लगता है और फिर वह नशे में डूबकर अपने को तनाव मुक्त करता है तो फिर काल्पनिक दुनिया व स्वप्न लोक में खो जाता है। मादक पदार्थों का लगातार सेवन व्यक्ति के शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव डालता है। व्यक्ति की आयु कम हो जाती है। परिवार पर भी नशा का प्रभाव अच्छा नहीं होता है, परिवार के सदस्यों का नैसर्गिक विकास रूक जाता है नशे से शिक्षण संस्थायें भी प्रभावित होती है। मादक पदार्थों के दुरूपयोग को न केवल विपथगामी व्यवहार के रूप में बल्कि एक सामाजिक समस्या की तरह भी देखा जा सकता है। कुछ पश्चिमी देशों ने मादक द्रव्यों के सेवन को लम्बे समय से एक महत्वपूर्ण सामाजिक समस्या माना है। परन्तु भारत ने केवल पिछड़े ड़ेढ़ दशक से ही इसे सामाजिक समस्या के रूप में स्वीकारा है। आज जरूरत है समय रहते यदि हमने युवा पीढ़ी को नशे के दुष्परिणामों से परिचित नहीं कराया तो पूरे समाज व राष्ट्र का विनाश हमें अपनी आंखों ये देखने के लिये मजबूर होना पड़ेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची -

1. एनरेट ए. वेनिक : एनावल एप्रोज दू ड्रग एजुकेशन, हेम्पशायर, यूनाइटेड स्टेट, जून 1974
2. सिंह. डॉ. एम.एन. : नशे का फैलता जाल, समाज कल्याण, नई दिल्ली फरवरी 1994
3. राम आहूजा: सामाजिक समस्यायें, रावत पब्लिकेशन, जयपुर 2000
4. आनन्द प्रकाश सिंह : सामाजिक समस्यायें और अपराध, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2007
5. आउट लुक (पत्रिका): बेपरवाह सेक्स विशेषांक, ए.बी. 6 सफदर जंग एनक्लेव, नई दिल्ली फरवरी 2011
6. इण्डिया टुडे (पत्रिका): महिलाओं का मन मांगे मोर विशेषांक, लिविंग मीडिया इंडिया लिमिटेड नोएडा, दिल्ली, दिसम्बर 2013
7. लाइव इण्डिया (पत्रिका): नशाखोरी एक भयावह सच विशेषांक, समूह जीवन कार्यालय पुणे से प्रकाशित, दिसंबर 2014